शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

गीतांजलि श्री की कहानियों में मृत्यु बोध

डॉ.राजेश्वरी
हिंदी शिक्षिका
माल्या अदिति इंटरनेशनल स्कूल
बंगलुरू, कर्नाटक, भारत

शोध संक्षेप

मृत्युबोध शाश्वत सत्य होने के बावजूद हर मनुष्य के लिए एक अबूझ पहेली रहा है। समय-समय पर अनेक रूपों में साहित्यकार इस सच को अपनी कल्पना शक्ति अथवा अनुभवों द्वारा चित्रित करते रहे हैं। हमारा प्राचीन भारतीय साहित्य तो इस सत्य की गहराई से विवेचना करता है। उन्होंने गूढ़ तत्व की व्याख्या के लिए काहानियों को ही माध्यम बनाया है। स्वयं गौतम बुद्ध ने अपने अनुभवों से दुनिया को सत्य से परिचित कराया है। इसी परम्परा को साहित्यकारों ने आगे बढ़ाया है। कहानियों की विधा में गीतांजलि श्री का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके कथा साहित्य में मृत्युबोध की अभिव्यक्ति की पड़ताल की गई है।

प्रस्तावना

बुद्ध के शिष्य उनसे पूछते हैं कि इस दुनिया में आपको सबसे आश्चर्यजनक क्या लगता है। बुद्ध कहते हैं कि-ये जानते हुए भी कि हमें एक दिन मर जाना है, हमारी दौड़ जारी है। सचमुच.ये कितना आश्चर्यजनक है। हम सब जानते हैं कि हम सब एक दिन मर जाने वाले हैं, किसी के लिए कोई दिन और किसी के लिए कोई.या शायद आज ही.अभी.फिर भी हम यूँ जी रहे हैं, जैसे हमें यहीं रहना है, हमेशा-हमेशा के लिए..। कहीं से भी शुरू करो मृत्यु का विचार हमें एक ही जगह ले जाता है, जीवन का अंत। आचार्य हजारी प्रसाद अपने निबंध 'शिरीष के फूल' में लिखते हैं कि काल देवता सपासप कोड बरसा रहा है। आगे की ओर मुंह किए रहो। जमे की मरे। हम भूले रहते हैं कि दरअसल हम उस मंज़िल की ओर बढ़ रहे हैं जिसका कोई विकल्प नहीं है, जिसमें चुनाव की स्वतंत्रता नहीं है और जिससे निजात भी नहीं है। हम लगातार मृत्यु के साए में जीते हैं किन्तु उससे बहुत दूर होने का भ्रम पाले रहते हैं। हम दौड़ में हैं, लगातार, एक-दूसरे को धकियाकर आगे जाने की दौड़ में..सबसे आगे होने, होना चाहने की दौड़ में, एक मंज़िल को पाकर दूसरी कई-कई मंज़िलों को पाने की दौड़ में, इस सच को जानने के बावजूद कि एक दिन यहीं सब छूट जाना है, एक...भ्रम...एक झूठ...जिंदगी को संचालित करता है और वो हमें खूबसूरत लगती है...कितना अजीब है ना...!1

मृत्यु पृथ्वी पर हर तरह के अस्तित्व को परिभाषित करती है। यह मानवीय अस्तित्व की अनिवार्य सीमा नहीं है। वह एक निक्षेप है, जीवन के अतं और उसकी दोबारा शुरूआत के मध्य। दुनियादारी और पूर्वाग्रहों से दूर होकर सोचें तो लगेगा कि हकीकत में हमारा जन्म कदम-दर-कदम मौत की ओर बढ़ने के लिए हुआ है, क्योंकि उससे अलग हमारे होने की कोई और परिणति हो ही नहीं सकती। दुनिया के सारे दर्शन और अध्यात्म का अस्तित्व ही इस बात पर है कि आखिरकार हमें सब कुछ से कुछ नहीं हो जाना है, हमें मर जाना है, सिर्फ़ याद बन कर रह जाना है...लेकिन यही महत्वपूर्ण सत्य हम भूल जाते हैं। शायद सृष्टि के गतिमान रहने का रहस्य यही भ्रम है कि हम कभी नहीं मरने वाले।2

गीतांजली श्री की कहानियों में म्रत्यु बोध

मौत का एक दिन मुअय्यन है, नींद क्यों रातभर नहीं आती कथन को चरितार्थ करती है, गीतांजलि

श्री की कहानी 'भीतराग' जिसका नायक पचहत्तर वर्षीय गिरधारी लाल हमेशा मृत्यु के भय से ग्रस्त रहता है। उन्हें सदा लगता रहता है- कौन जाने कब...। बच्चों को कहीं भेजने से डरते हैं- मैं न देख पाया तो ? मगर मैं यहाँ न हुआ तो ? कौन कह सकता है कब...? उनके पुराने मित्र बचवा ठाकुर उनसे मिलने आते हैं तथा गुलगुले खाकर सो जाते हैं तो सारी रात उन्हें लगता रहता है कि आज तो उन्हें कुछ हो ही जाएगा। अचानक उन्हें डर लगा कि बगल में पड़ा आदमी कहीं पड़े-पड़े न जाने कब...बुदबुद.. तिरानबे की उमर कौनो मजाक तो नहीं है। कितना भी कड़ियल इनसान हो कोई, तिरानबे पर एक पैर उधर लटका ही समझो। कहीं दूसरा भी...बुदबुद..। टॉर्च से देखते हैं कि साँस चल भी रही है कि नहीं-कमाल है, ये कौनसी साँसें हैं जो लाइट फेंकने पर ही सुनाई पड़ती हैं ?ष् आँखें जबरन बंद करें तो तरह-तरह की आकृतियाँ दिखती जातीं-खुली आँखें, चढ़ी पुतलियाँ, काठ-सा बदन, ज़बान बाहर को तिरछी लटकती, आदि आदि ! पट से आँखें खोल देते तो दिमाग तजुर्बेकार आवाज़ में सुनाने लगता- आखिर फ़लाने के संग क्या हुआ था, खरबूजा खाया और पेट चल पड़ा, सात दफ़े बाथरूम गया और फिर टोटल गया, ढमाका तो बाथरूम जा रहा था, रास्ते में ही ढेर हो गया, जबकि वो सत्तर का भी नहीं हो पाया था। सारी रात गिरधारीजी की यों कटी-टहलकदमी करते, अदंर झाँक आते, पलँग पे बैठ लेते, झुक के ठाकुर-ठाकुर आवाज़ लगा देते, हैं. हरकत होती तो जल्दी से लेट के आँखें मूँद लेते, फिर उठते, देखते, कुरसी पे बैठ जाते, जाँचते, बाहर निकल आते ।3

इस कहानी से लगता है कि मौत का डर शायद मौत से अधिक तकलीफ़ देता है, खुद को भी और परिवार के अन्य सदस्यों को भी । उनकी एक अन्य कहानी 'इति' में परिवार के लोग अपने पिता की मृत्यु को लेकर परेशान हैं- मौत को लेकर हम आतंकित थे। कि जब वह आदमी मरेगा तो यह सारी झंझट होगी कि क्या कहाँ कैसे कब?...हाँ ऐसा हो सकता तो वह खुद हमें अपनी मौत की खबर दे सकते थे पर ऐसा तो होता नहीं।...सब अपने आप होता चला गया।...हाँ ठीक ही ठाक थे वे, पचासी और प्लस, और हमीं थे जो इस चिंता में कुढ़े जा रहे थे कि न जाने किस आड़ी तिरछी हालत में खत्म होंगे वे और खत्म करेंगे हमें। हालाँकि यह भी लगने लगा था कि वे कभी नहीं खत्म होंगे।...जो मौत के पहले का उनका सलोना भाव था। .कमज़ोरी आ रही है...मुझे भूख नहीं है, वे बोले जो एकदम सकते में लाने वाली बात थी। चैक अप करा लेना चाहिए...सबको(सिवाय अपनी पत्नी के) गिनती में याद करके...बस आँखें बंद कर लीं...माँ बुदबुदाती कि मैं आज़ाद हो गई, ज़िम्मेदारी से बरी, जहाँ चाहूँ जाऊँ..उसकी आँखों का रंग उसकी साड़ी से फीका। ...आँखें बंद और जिस्म का कोई हिस्सा, न जबड़ा, न पुतलियाँ, इधर उधर बेढब-बेढंगा लुढ़का झूलता।...हम सब ने उन्हें छू लिया..अपने खून से जुड़ के या किसी और जुड़ाव के कारण, इक बदमिज़ाज, बदज़ुबाँ आदमी से...जो पूरी तरह जा चुका था, कोई आभास पीछे न छोड़कर, यादों के सिवा, जो भी बदलने वाली थीं, उस राख में, जिसमें वह बदल जाएगा सूर्यास्त से पहले। बह जायेगा, उड़ जायेगा, गंगा में और हवा में। ..हम सबने सिवाय माँ के, जिसने न देखा न छुआ..उसने तब भी नहीं देखा जब हम सबको वहाँ से निकाल दिया गया, उनके रस्मी स्नान के लिए..धीरे-धीरे एक एक करके भौतिक तत्वों से मुक्त होते जाते ...जब पुरुषजन उन्हें कमरे से लेकर निकले अर्थी पर लिटाकर, अब नये नवेले से चमकदार सफ़ेद चादर में लिपटे, कि माँ चेती और चीख पड़ी कि एक बार देख तो लेने दो।...हम सब चीखे एक सुर में, रुको...उस सारे कोलाहल में पुरोहित..उनकी शुद्धि हो चुकी है, औरत की निगाह उन्हें अशुद्ध कर देगी।...भाई ने अर्थी नीचे की और उनके चेहरे से चादर धीरे से माँ के लिए हटाई और वे लकदक नये सफ़ेद

पजामा-कुर्ता में दिखे जो उन्हें ले जाएगा लपटों पर सवार करके, कहीं तो। छोड़ कर पीछे एक हाँडी में मुट्ठी भर राख बस..उतरेगी वाराणसी धाम पर..अर्पित होने, हमेशा के लिये गंगा में अतंरध्यान हो जाने, एक यात्रा में धरती से आग से पानी से अनंत तक की ।4

'वे तीन'-तीन सहेलियों (प्रीथा,सबीना और राधू) की कहानी है, जिसमें तीनों एक साथ नाटकों में काम करती हैं। सबीना और राधू के बीच कुछ मतभेद के बावजूद प्रीथा से दोनों की दोस्ती बनी रहती है। कालान्तर में प्रीथा अमरीका चली जाती है। एक दिन अचानक राधू एक अखबार झोले में डाले सबीना के घर पहुँचती है। दोनों खबर के बारे में जानती हैं, लेकिन इस विषय पर कोई बात नहीं करतीं। भरे मन से वापस जाने लगती है तभी विभु आ जाता है और अखबार में छपी खबर के बारे में पूछता है- अखबार में तुमने देखा होगा। ज़िंदगी का कभी कुछ पता नहीं चलता। राधू जल्दी से चली जाती है और सबीना ने बिना धक्का दिए उसे जल्दी भगाने को धक्का दिया। पहले कि विभु कह दे- इट इज़ सो टैरिबल, इट इज़ सो सैड, आल अलोन इन हौरिबल न्यूयॉर्क! व्हाट अ ग्हास्टली डैथ, तुम्हारी दोनों की जिगरी की..।5

इसी तरह की एक और कहानी है 'कसक, जिसमें एक लड़की अपनी घनिष्ठ मित्र की अनेकानेक विशेषताओं को याद कर रही है, जिन पर उसे कभी रश्क होता था। हाऊ डज़ इट मैटर! उसका तकिया कलाम था..अतं तक। वह जीवन के बीच है..वह आज भी उसी में विलीन है, क्योंकि मौत भी जीवन में है। किसी प्रियजन की मौत का ख्याल कितना व्याकुल कर देता है। नहीं, इसे कुछ न हो.। जब ख्याल नहीं, ख़ुद मौत आ जाती है तो क्या बचता है ? एक सुन्नाहट, एक शून्य? .उसके जीने को उससे ज्यादा पहचानने का दावा करती। जीने को न। मरने की बात और होगी। कितने सवाल बन गए हैं। किससे पूछूँ?.उसके मन में तब क्या था..क्यों किया ऐसा..वह जो इतना जीती थी, वह ऐसा नहीं कर सकती । फिर मन व्याकुल होने लगता है। ऐसे में मेरे पास एक ममता भरी रूह बैठ जाती है।..पूछना चाहती हूँ उससे, क्या था तुम्हारे मन में जब तुम उड़ती हुई नीचे चली आ रही थीं, उस तेरहवीं मंज़िल से ? क्या तब भी तुम जीवन के भीतर थीं ?..बस एक बेढब सा ख़याल आता है कि और कुछ हो न हो, इतना ज़रूर है कि जो दूसरों की मौत पर रो देती थी, अपनी मौत पर कतई नहीं रोई होगी..।6

'शान्ति-पाठ' कहानी पाठकों में एक अजीब-सी दहशत और सिहरन सी पैदा कर देती है। इस कहानी में शिमला के इन्स्टीट्यूट में काम करने वाले एक आदमी की पत्नी आत्महत्या कर लेती है। अखबार में खबर छपती है कि बेहद विकृत, पहचान के परे, जला भुना, हड्डियों में गला-चिपका.। सब लोगों द्वारा उस आदमी पर इस बात का आरोप लगाया जाता है कि उसने ही अपनी पत्नी की हत्या की है, हालाँकि पुलिस उसे क्लीन चिट दे देती है। कहा जाता है कि वह औरत पहले से पागल थी, पर पागल होने की भी कोई वजह तो रही ही होगी। बारिश की एक शाम को वह आदमी स्टडी रूम में आता है, उसे देखकर लेखिका की पीठ पर मानों छिपकली सी रेंग जाती है। वह मेज़ पर झुककर बैठ जाता है तथा किसी पेपर पर कुछ लिखने लगता। अचानक वह पेपर उसके हाथ से उड़कर गिरता है। पत्नी के शान्ति पाठ की सूचना के साथ कुछ पंक्तियाँ लिखी हुई हैं, जिन्हें वह पढ़ती है। उनकी तरफ़ देखती है तो लगता है कि खुली आँखों से लगातार उसे घूर रहा है।7

'वैराग्य' एक लड़की की भावनाओं की अत्यंत मार्मिक कहानी है, जो अपनी बड़ी बहन को तिल-तिल कर मरता देखती है और अनेक वर्षों बाद भी उस दुख से उबर नहीं पाई है-तुम तिल-तिल कर मर रही थीं, एक-एक करके तुम्हारे अंग झरते जा रहे थे ....क्या तुम्हारे बेकार, लकवा से मरते जिस्म को तुम कह सकते हैं....तुम बस दो आँखें थीं जिनमें शून्य भर था और शून्य के बीच दो

जलते बिंदु थे, जिनसे लटकी थी साँस की नली ..उनके आजू-बाजू तो मिट्टी थी जो झर-झर झर रही थी ....उसी को कह रहे थे देखा है तुम्हें आखिरी पल तक। दीदी, जब तुम्हारे चारों ओर खड़े हम सब बुरी तरह रो रहे थे मैंने सोचा था, हाँ, खुदा होता है तुम्हारे जैसा दयालु, जिने कुछ बरसों के लिए तुम्हें मीठी नींद सुला दिया है, वरना कैसे तुम बरदाश्त करोगी तुम पर झुके फूट-फूटकर रोते हुए अपने खानदान को ? ...जब मैं तुम्हारे पास आना चाहती हूँ तो तुम नहीं, यह दुःख पास आ कर बैठ जाता है। ..बस पास बैठा वह मुझे देखता रहता है, मैं उसे। ....उस खोह में कोई आवाज़ नहीं है, बस तुम्हारी एक धीमी सी फुसफुसाहट है, जब तुमने अस्पताल में पड़े-पड़े मुझसे कहा था, इधर आओ नन्ही, मैं तुम्हें बड़ा नहीं देख पाऊँगी। पर मैं बड़ी हुई ही कहाँ ? उतनी-सी ही हूँ और उसी तरह हाथ बढ़ाती हूँ कि ले लो मुझे अपने सीने में। तुम्हारा सीना जो मिट्टी था, जिसे दीमक लग गई थी, जो झर-झर हमारे आगे झरता जा रहा था। कितना भारी बोध रहा होगा तुम्हारा दीदी, जो तुम कह भी नहीं सकती थीं। हम सब की आँखों में मृत्युबोध को छिपाने की कोशिश देखकर चिल्ला नहीं सकती थीं। मैं भूली नहीं हूँ दीदी कि जब तुमने देखा हम सब रोने लगे तो तुमने हमें बख्शने के लिए वे आँखें जान बूझकर बंद कर लीं, सुनती रहीं हमारी बदहवास रुलाई को, पर तय कर चुकी थीं कि आँखें खोलकर अब हमें और नहीं सहवाओगी । तुम इनसान रही ही नहीं, एक आध्यामिक सत्य रह गईं ।8

'पीला सूरज' और 'तितलियाँ' ऐसी अन्य दो कहानियाँ हैं, जिनमें मृत्युबोध की अभिव्यक्ति हुई है। इन दोनों कहानियों में बच्चे की मौत का ज़िक्र है, जो कभी लेखिका के बचपन का साथी था और जिसे पानी में खेलने का बहुत शौक था। 'पीला सूरज' में एक औरत जेनेवा के खराब मौसम में फंसी है, जहाँ बरबस उसे टुइयाँ की याद आने लगती है- जैसे बचपन में पानी में डूबते वक्त होता था..दादी से बचकर टुइयाँ और मैं पीछे के हौज़ में नहाते थे। हम पानी में घुसकर मरने का नाटक करते थे, देह को ढीला छोड़ देते कि डूबना है तो डूब जाएँ।...कितने साल बाद मैंने उस हौज़ पर फ्लोट करती आम की गुठलियाँ देखी थीं।..इन्हें टुइयाँ ने ही कभी चूसकर फेंका होगा। उन लाशों को देखकर मन कहीं वीरान हो जाता था।...विचित्र है यह बरसात जो मैं उन लाशों में खो रही हूँ ।..अजीब खौफ़ में मन डूब रहा है ।...पीछे खड् के पार गन्नों सी ऊँची घास में हाथी, बाघ, चीता रहते हैं ।..शायद मैंने शैतानी की हो और वहाँ फेंक दी गई हूँ। बड़े काका कहते थे, टुइयाँ को वहीं फेंक दिया था। उसे क्या शेर उठा ले गया? मैं दादी से पूछती। वह कहती कि नहीं उसे मंडा बाई उठा के ले गई। ...मंडा बाई ! मन के किसी कोने में ठंडी पड़ी राख से उठता एक दबा हुआ आहवान ।...मैं दबे स्वर में पूछती- मंडा बाई, क्या तुम ले गई हो टुइयाँ को?... टुईयाँ मर गया..अचानक हवा के साथ फुसफुसाती और तेज़ी से चलने लगती ।9

'तितलियाँ' में लेखिका को केरल का भीगा-भीगा मौसम एक छोटे बच्चे इक्की की याद दिलाता है- इक्की को पानी ऐसा लुभाता।..शुरू ही किया था चलना और पहले कि मैं पकड़ पाऊँ मेरी उँगली छोड़ फव्वारे के अदंर। अरे रे रे, मैं भागी तो पीछे, डूब जाएगा।..बस सीख गया वह शब्द। डूब डूब, जब देखो तब चिल्लाना।..डूब-डूब ललकारता। सब हँसते बच्चा डूब-डूब की मचाये है।

माँ कहती उसे अकेला मत छोड़ना। मैंने कहाँ छोड़ा, उसने छोड़ दिया। न छोड़ा होता तो अभी होता। इसी कहानी में वह कुछ तेरह-चौदह साल की लड़कियों से मिलती है जिनका मुफ्त उपचार होता है- इलाज नहीं। देखरेख। कभी भी कुछ भी हो सकता है। दूसरे अंग चपेट में आ सकते हैं, दिल, गुर्दा..। कोमा। इसके मरीज अधिकतर चालीस पैंतालीस तक ही संभल पाते हैं । ..जिन्हें सिखाया जा रहा है अपनी रगों के प्रति चौकन्ना रहना। और रहना। जब तक... । मर रही हैं क्या

? मुझे डर लगता है और मैं बौखला के उनके बीच कदम बढ़ाती हूँ।10

निष्कर्ष

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि गीतांजलि श्री की अनेक कहानियों में मृत्युबोध की अभिव्यक्ति बहुत मार्मिक ढंग से हुई है। उन्होंने हर कथा में पूरे मनोयोग से इतना सजीव चित्रण किया है, जो पाठकों के मन को अदंर तक छूने में पूर्णतया सफल है।

संदर्भ ग्रन्थ

1.मृत्युबोध के जागते ही.!,अस्तित्व विचारशील होने का अहसास, अमिता नीरव, जागरण जंक्शन, रीडर्स ब्लॉग, 16.9.2011

2 मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में मृत्युबोध, वाजिद रसीद खाँ, अपनी माटी संस्थान, त्रैमासिक ई-पत्रिका, मार्च-2014

3 भीतराग, गीतांजलि श्री, वैराग्य -कहानी संग्रह, पृ. 62-74

4. इति, गीतांजलि श्री, यहाँ हाथी रहते थे-कहानी संग्रह, पृ. 49-63

5. वे तीन, गीतांजलि श्री, वैराग्य - कहानी संग्रह, पृ. 153-158

6. कसक, गीतांजलि श्री, अनुगूँज-कहानी संग्रह, पृ. 69-85

7. शांति-पाठ, गीतांजलि श्री, वैराग्य - कहानी संग्रह, पृ. 159-167

8. वैराग्य, गीतांजलि श्री, वैराग्य - कहानी संग्रह, पृ. 168-174

9. पीला सूरज, गीतांजलि श्री, अनुगूँज-कहानी संग्रह, पृ. 31-40

10.तितलियाँ, गीतांजलि श्री, यहाँ हाथी रहते थे-कहानी संग्रह, पृ. 111-123